शिवभगवानोवाच्य– इनका नाम तो शिव नहीं है।इनका नाम है ब्रह्मा और इन द्वारा बात करते हैं।शिवभगवानोवाच्य – यह तो बहुत बार समझाया है कि कोई भी मनुष्य को या देवताओं को अथवा सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भगवान नहीं कहा जा सकता।जिनका कोई आकार वा साकार चित्र है उनको भगवान नहीं कह सकते।भगवान कहा ही जाता है बेहद के बाप को।भगवान क्या चीज है यह कोई को भी पता नहीं है।नेति2 करते आते हैं अर्थात् हम नहीं जानते।तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो यथार्थ रीति जानते हैं।भगवान कोई दूसरी चीज नहीं।आत्मा कहती ही है भगवान।अब आत्मा तो है ही बिंदी।तो बाप भी बिंदी ही होगा।अब बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं।बाबा के पास 25–30 वर्ष के बच्चे भी ऐसे हैं जो यह भी नहीं जानते कि हम आत्मा कैसे बिंदी हैं।कुछ भी नहीं समझते।कोई तो अच्छी रीति समझते हैं।बाप को याद करते हैं।बेहद का बाप है सच्चा हीरा।हीरे को बहुत अच्छी2 डिब्बी में डाला जाता है।कोई के पास अच्छे हीरे होते हैं तो उनको दिखाने लिए फिर सोने–चांदी की डिब्बी में डाल फिर दिखाते हैं।हीरे को जवाहरी ही जाने।और कोई जान नहीं सकते।झूठे हीरे दिये जावें तो भी किसी को पता नहीं पड़े।ऐसे बहुत ठगाये जाते हैं।अब सच्चा बाप आया है ;परंतु झूठे भी ऐसे2 हैं जो मनुष्यों को पता भी नहीं पड़े।गाया भी जाता है सच्च की बेड़ी डूबे नहीं.....झूठ की बेड़ी हिलती भी नहीं है।इनको कितना हिलाने की करते हैं।जो यहां इस बेड़ी में बैठे हैं वो ही हिलाने की कोशिश करते हैं।ट्रेटर गाये हुये हैं ना।जिसको ही धूते–धूतियां भी कहते हैं।तो अब तुम बच्चे जानते हो खिवैया बाप आया हुआ है।बागवान भी है।बाप ने समझाया है यह है कांटों का जंगल।सब पतित है ना।कितना झूठ है।सच्चे बाप को विरला ही कोई जानते हैं।यहां रहने वाले भी नहीं जानते।पूरी पहचान नहीं है ;क्योंकि गुप्त है ना।भगवान को याद तो सभी करते हैं।यह भी जानते है कि वो निराकार है।परमधाम में रहते हैं।तुम भी निराकार आत्मा हो।यह साकार में बैठे2 भूल गये हो।साकार में रहते2 साकार ही याद आ जाता है।अब तुम देही अभिमानी बनते हो।उनको कहा ही जाता है परमपिता परमआत्मा माना ही परमात्मा। यह तो बिल्कुल सहज है (समझाना)।परमपिता अर्थात् परे ते परे रहने वाला परमात्मा।तुमको कहा जाता है आत्मा।तुमको परम नहीं कहा जाता है।तुम तो पुनर्जन्म लेते हो ना।यह बातें कोई भी नहीं जानते।भगवान को भी सर्वव्यापी कह देते हैं।भक्त भगवान को ढूंढते हैं पहाड़ों पर,तीर्थों पर, नदियों पर भी जाते हैं।समझते हैं नदियां पतित–पावनी हें।इनमें स्नान करने से हम पावन बन जावेंगे।भक्ति मार्ग में यह भी किसी को पता नहीं पड़ता कि हमको चाहिए क्या।सिर्फ कह देते हैं हमको मुक्ति (मोक्ष) चाहिए ; क्योंकि यहां दुःख होने कारण तंग हैं।सतयुग में कोई मोक्ष वा मुक्ति थोड़े ही मांगेंगे।वहां भगवान को कोई बुलाते नहीं हैं।यहां दुःख होने कारण बुलाते हैं।भक्ति से कोई का दुःख हर नहीं सकता।भल कोई सारा दिन, सारी रात बैठकर राम2 जपे तो भी दुःख नहीं हट सकता।यह है ही रावण राज्य।दुःख तो गले से जैसे बंधा हुआ है।गाते भी हैं दुःख में सिमरण सब करे, सुख में करे ना कोये।इसका मतलब जरूर सुख था।अब दुःख है।सुख था सतयुग में।दुःख ह ैअब कलियुग में।इसलिए ही इनको कांटों का जंगल कहा जाता है।पहल नम्बर है देह अभिमान का कांटा।फिर है काम का कांटा।अब तुम बच्चे समझते हो तुम इन आंखों से जो कुछ देखते हो वो सब विनाश होने का है।अब तुमको चलना ही है शांतिधाम।अपने घर को और राजधानी को याद करो।ऐसे नहीं कि सिर्फ घर को ही याद करने से तुम पावन बन जावेंगे।कोई पतित–पावन नहीं है।तुम पतित–पावन कहते ही हो बाप को।तो बाप को ही याद करना पड़े।वो कहते हैं मामएकम् याद करो।मुझे ही बुलाते हो ना।बाबा आकर पावन बनाओ।ज्ञान का सागर है तो जरूर मुख से आकर

समझाना पड़े।प्रेरणा तो नहीं करेंगे।एक तरफ शिव जयंती भी मनाते हैं ,दूसरी तरफ कहते हैं नाम–रूप से न्यारा है।नाम–रूप से न्यारी चीज तो कोई होती ही नहीं।फिर कह देते ठिक्कर–भित्तर सबमें है।अनेक मते हैं ना।बाप समझाते हैं कि तुमको रावण .....ने तुच्छ बुद्धि बना दिया है।इसलिए ही देवताओं के आगे जाकर नमस्ते करते हैं।कोई तो नास्तिक होते हैं।किसी को भी मानते नहीं हैं।यहां बाप के पास तो आते ही हैं ब्राह्मण।जिनको 5000वर्ष पहले भी समझाया था।लिखा हुआ भी है कि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं तो ब्रह्मा की आलोक ठहरे।प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहूर है।तो जरूर ब्राह्मण–ब्राह्मणियां भी होंगे।अब तुम ब्राह्मण धर्म में आये हो।शूद्र धर्म से तुम निकल आये हो।हिन्दुओं को मुसलमान लोग काफर कहते हैं ;क्योंक वो अपने धर्म को जानते ही नहीं हैं।कब किसी को मानेंगे ,कब किसी को मानेंगे।बहुतों के पास जाते रहेंगे।क्रिश्चियन लोग कब किसी के पास जावेंगे नहीं।आजकल सन्यासी लोग जाकर इनको ठगते हैं कि चलो तुमको भारत का राजयोग सिखलावें।बहुतों को ठगते हैं।अब तुम सिद्ध कर बताते हो कि भगवान बाप तो कहते हैं कि मुझे याद करो।एक दिन अखबार में भी निकलेगा कि भगवान बाप कहते हैं कि मुझे ही याद करने से तुम पतित से पावन बन सकेंगे।जब विनाश नजदीक होगा तब अखबार द्वारा भी यह आवाज कानों में पड़ेगा।अखबारों में तो कहां2 के समाचार आते हैं ना।तुम अब भी डाल सकते हो भगवानोवाच्य।परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं मैं हूँ पतित–पावन।मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे।इस पतित दुनियां का विनाश सामने खड़ा है।विनाश जरूर होना है यह भी सभी को पक्का हो जावेगा।रिहर्सल भी होती रहेगी।तुम बच्चे जानते हो जब तक राजधानी स्थापन नहीं हुई है तब तक विनाश नहीं होगा।अर्थक्वेक्स आदि भी होनी है ना।एक तरफ बॉम्ब्स दूसरी तरफ नैचुरल कैलेमिटीज भी आनी है ना।अन्न आदि भी नहीं मिलेगा।स्टीम्बर्स नहीं आवेंगे तो फैमन पड़ जावेगा।भूख हड़ताल जो करते हैं वो फिर भी जल, माखी आदि कुछ ना कुछ लेते हैं।वजन में हल्के हो जाते हैं।यह तो बैठे2 अचानक अर्थक्वेक्स होंगे।मर जावेंगे।विनाश तो जरूर होना है।साधु–संत आदि ऐसे नहीं कहेंगे कि विनाश होना है।इसलिए राम2 कहते।वो तो भगवान को ही नहीं जानते हैं।भगवान तो खुद ही अपने को जाने और ना जाने .....।फिर उनका समय है आने का।जो फिर इस बूढ़े तन में आकर सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत की नालेज सुनाते हैं।अब तुम बवचे जानते हो अब वापस जाना है।इसमें तो खुश होना चाहिए।हम शांतिधाम जाते हैं।मनुष्य शांति ही चाहते हैं ;परंतु शांति कौन देवे?कहते हैं ना शांतिदेवा.....अब देवों का देव तो एक ही उंच ते उंच बाप है।वो कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर ले जाउंगा।सबको।एक के भी नहीं छोडूंगा।ड्रामा अनुसार सबको जाना ही है।गाया हुआ भी है मच्छरों सदृश सब आत्मायें जाती हैं।सतयुग में तो बहुत कम मनुष्य होते हैं।अब कलियुग अंत में कितने ढेर मनुष्य हैं। फिर थोड़े कैसे होंगे।अब है संगम।तुम सतयुग में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो।जानते हो यह विनाश होगा।मच्छरों सदृश आत्मायें जावेंगी।सारा झुण्ड ही जावेगा।सतयुग में बहुत थोड़े रहेंगे।अब बाप कहते हैं कोई भी देहधारी के याद नहीं करो।देखते हुये भी जैसे कि नहीं देखते हो।हम आत्मा हैं।हम अपने घर चली जावेंगी।खुशी से पुराना शरीर छोड़ देना होता है।अपने शांतिधाम को याद करते रहेंगे तो अंत मते सो गते हो जावेगी।एक बीप को ही याद करना इसी में ही मेहनत है।मेहनत बिना उंच पद थोड़े ही मिलेगा।बाप आते ही हैं तुमको नर से नारायण बनाने।अब इस पुरानी दुनियां में कोई चैन नहीं है।चैन है ही शांतिधाम और सुखधाम में।यहां तो फिर घर2 में अशांति ,मार–पीट है।बाप कहते हैं अब इस छी2 दुनियां के भूलो।मीठे2 बच्चों मैं तुम्हारे लिए ही स्वर्ग की स्थापना करने आया हूँ।इस नर्क में तो तुम पतित बन गये हो।अब स्वर्ग में चलना है।अब बाप

के और स्वर्ग के याद करो तो अंत मते सो गते हो जावेगी।शादी आदि में भले जाओ ;परंतु याद बाप को करो।नालेज सारी बुद्धि में रहनी चाहिए।भल घर में रहो, बच्चों आदि की सम्भाल करो मगर बुद्धि में यह रखो कि यह बाबा का फरमान है मेरे बच्चों मुझे याद करो।.... छोड़ना नहीं है।नहीं तो बच्चों की कौन सम्भाल करेगा?भक्त लोग घर में रहते हैं याद कृष्ण की आती रहेगी।गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं फिर भी भक्त कहलाते हैं ;क्योंकि भक्ति करते हैं।घर–बार भी सम्भालते हैं।विकार में जाते हैं तो भी गुरू लोग उनको कहते हैं कि कृष्ण को याद करके जाओ तो कृष्ण सा बच्चा पैदा होगा।उस समय जैसी2 बुद्धि होती है वैसा ही बच्चा पैदा होता है।कोई काणा, कोई कैसा।कोई के दाढ़ी वा मूंछ आदि निकल आती है।यह सारा मदार है खयालात पर।उस समय जैसे खयालात होते हैं तो वैसे ही बवचे पैदा हो जाते हैं।इन बातों में तुम बच्चों को जाना नहीं है।तुमको अब सुनाई जाती है सतयुग में जाने की बातें।जिसकी स्थापना हो रही है।वैकुण्ठ की स्थापना कोई कृष्ण नहीं करते है।कृष्ण तो मालिक बन गया बाप द्वारा।बाप से वर्सा लिया है।संगम के समय ही गीता का भगवान आते हैं।कृष्ण के भगवान नहीं कहेंगे।यह तो पढ़ाने वाले ठहरे।गीता सुनाई बीप ने और बच्चों ने सुनी।भक्तिमार्ग में फिर बीप की बदली बवचे का नाम डालकर बाप को भूल गये हैं।तो गीता भी खंडन हो गई।वो पढ़ने से क्या होगा?बाप तो राजयोग सिखाकर गये।वो सतयुग का मालिक बना।भक्ति मार्ग की सत्य नारायण की कथा सुनने से कोई स्वर्ग का मालिक बनेंगे क्या?ना इस खयाल से कोई सुनते।भक्तिमार्ग में है ही दण्ड कथायें।फायदा कुछ भी नहीं मिलता।साधु–संत आदि अपना2 मंत्र देते हैं।फोटो देते हैं।यहां वो कोई बात ही नहीं है।दूसरे सतसंगों में जावेंगे कहेंगे स्वामी की कथा है।फलाने की कथा है।किसकी कथा?वेदान्त की, गीता की,भागवत की,रामायण की।अब तुम तो जानते हो हमको पढ़ाने वाला कोई देहधारी नहीं है।ना कोई शास्त्र ही पढ़ना होता है।शिवबाबा ने कोई शास्त्र पढ़े हैं क्या?पढ़ते हैं मनुष्य।शिवबाबा कहते हैं मैं कोई गीता आदि पढ़ा हुआ नहीं हूँ।यह रथ जिसमें मै बैठा हूँ यह पढ़ा हुआ हूँ।मैं नहीं पढ़ा हुआ हूँ।मेरे में सारा सृष्टि चक्र का ज्ञान है।यह तो रोज गीता पढ़ता था तोते मुआफिक।जब बाप ने प्रवेश किया तो गीता छोड़ दी ;क्योंकि बुद्धि में आ गया कि यह तो शिवबाबा सुनाते हैं।कृष्ण ने तो गीता सुनाई ही नहीं।इस गुस्से में आकर गीता फेंक दी।यह तो गीता झूठी हो गई।सच्ची चीज हाथ आती है तो झूठी को छोड़ दिया जाता है।बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ।तो उनसे ममत्व मिटा दो।सिर्फ मुझे याद करो।यही मेहनत करनी है।सच्चे आशिक को बार2 माशूक की याद आती है।तुमको भी वैसा ही बनना चाहिए।बाप को याद करो।जानते हो हम आत्मा हैं।वो हमारा बाप है।फिर हम देहधारियों के याद ही क्यों करें?क्यों नहीं हम रचता को याद करें।वर्सा मिलता है रचता से।जैसा बच्चा लौकिक बाप और वर्से को याद करते हैं।अब पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे याद करो और स्वर्ग के वर्से को याद करो।इसमें झांज आदि बजाने की भी बात नहीं है।गीत भी कई अच्छे2 हैं जिनको लेकर अर्थ तुमको बताते हैं।बनाने वाले खुद नहीं जानते हैं।मीरा भक्तिन थी।तुम तो अब ज्ञानी हो।कोई ठीक काम नहीं करते हैं।तो बाबा उनको भक्त कह देते हैं।वो समझ जाते हैं बाबा ने मेरी ग्लानी की है।भक्त अर्थात् दुर्गति को पाया हुआ।तुम सब भक्त थे।अब भक्ति को छोड़ा है।ज्ञानी बने हैं ; क्योंकि समझते हैं कि भक्ति में दुर्गति होती है।भक्ति मार्ग है ही अंधेरी रात।ठोकरें खाते2 थक गये हो।जब भक्ति पूरी होती है तब ज्ञान जिन्दाबाद होता है।यह अक्षर उनके हैं जो फिर भक्तिमार्ग में गाते हैं।तो अब बाप को याद करो।मैसेंजर बनो।पैगम्बर बनो।सबको यह पैगाम दो कि बीप और वर्से को याद करो।तो सब पाप भस्म होंगे।अब वापस घर जाने का समय है। ओम।